This question paper contains 4 printed pages. Roll No. .....

**B.A. (Pt. II)** **Hindi Lit.-II**

# 2102-II (Regular)
# B.A. (Part-II) Examination, 2022

(Faculty of Arts)

[Also Common with Subsidiary Paper of B.A. (Hons.) Part-II]

(Three-Year Scheme of 10+2+3 Pattern)

# HINDI LITERATURE-II

द्वितीय प्रश्न-पत्र

## (नाटक एवं एकांकी)

**समय : 3 घंटे** **अधिकतम अंक : 100**

---

सभी (लघुत्तरात्मक तथा वर्णनात्मक) प्रश्नों के उत्तर मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही लिखिए। लघुत्तरात्मक प्रश्नों के उत्तर प्रश्नों के क्रमानुसार ही दीजिए। इसी प्रकार किसी भी एक वर्णनात्मक प्रश्न के अन्तर्गत पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर, उत्तर-पुस्तिका में अलग-अलग स्थानों पर हल करने के बजाय एक ही स्थान पर क्रमानुसार हल कीजिए।

किसी भी परीक्षार्थी को पूरक उत्तर-पुस्तिका नहीं दी जाएगी। अत: परीक्षार्थियों को चाहिए कि वे मुख्य उत्तर-पुस्तिका में ही समस्त प्रश्नों के उत्तर सही ढंग से लिखें।

प्रश्नों के उत्तर लिखने से पूर्व प्रश्न-पत्र पर रोल नम्बर अवश्य लिखिए।

1. निम्नलिखित अवतरणों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (4× 9 = 36)

(क) हमने पत्थर में जान डाल दी है, उसे गति दे दी है। वह भूल रहा है कि वह धरती कर पदार्थ है। उसके पैर धरती पर नहीं टिकते। पत्थर का वह मंदिर आज कल्पना के स्पर्श से हवा की तरह गतिमान, किरण की तरह स्पर्शहीन, सुंगध की तरह सर्वव्यापी हो रहा है। लेकिन ... लेकिन धरती उसे जकड़े हुए है, ईर्ष्या से।.... मुझे लगता है, जैसे अनजाने ही हम लोगों ने पृथ्वी और आकाश के बीच भीषण संघर्ष खड़ा कर दिया है। 9

**अथवा**

कैसी अद्‌भुत थी मेरी माँ। ... आँधियों के निर्दय झकझोर से भी न झुकने वाले तालवृक्ष की तरह। मुझे गोदी में लिये, बहुत पहले जब वह नगर में आयी थी, तो कौन उसका सहायक था? मजदूरी करके, गरीबी के कष्ट और वैभव के अपमान सहकर, उसने मुझे पाला।

(ख) "हे सूर्य भगवान्, हे भुवन भास्कर! बारह बरस तक दत्तचित हो मैंने तुम्हारे योग्य यह अभूतपूर्व गृह तैयार किया। आज जब उस लगन और तपस्या के बाद तुम्हारी उपासना का अवसर आया, तो तुम्हारे शिल्पी को ठुकराने वाले, उनके निर्दोष रक्त से रँगे हाथ तुम्हें अपनाने आ रहे हैं। भगवन् मैं यह कैसे सह सकता हूँ? तुम, मेरे, सारे जगत् के, प्रतिपालक हो, पर मैं यह कैसे भूल सकता हूँ कि मैं तुम्हारा निर्माता हूँ"। 9

**अथवा**

क्या हम लोग भेड़-बकरियाँ है, जो चाहे जिसके हवाले कर दी जायें? आज ही तो हमारे भाग्य का फैसला है। जिस सिहांसन को तुम आज डाँवाडोल कर रहे हो, वह हमारे ही तो कंधों पर टिका है। क्या उस पर वह बैठेगा, जिसके कारण सैकड़ों घर उजाड़ चुके हैं? वह जिसने कोणार्क के सौंदर्य निर्माता शिल्पियों को ठीकरों से तुच्छा मान ठुकराया? कलिंग हमारा है और उसके अधिपति है हमारे प्रजावत्सल नरेश श्री नरसिंह देव।

(ग) "तुम जानती हो, भय छोड़ देने से क्या होगा? तब मैं कुछ मिटा नहीं सकता, नाश नहीं कर सकता। मुझे बरबस सृजन करना होगा और तब हमारी आत्मा और शरीर के मंथन से जो निकलेगा, वह हमें मार डालेगा। हमारा अंत कर देगा। तुम बूढ़ी हो जाओगी, जीवन क्रीड़ा नन्हीं सी रतन-जड़ी रिस्टवाच की तरह रूक जाएगी।" 9

**अथवा**

शरीर की रेखा मिट जाए तो यह संसार और वह संसार एक ही है। शरीर तो जैसे एक भोगा कपडा है जो आत्मा से लिपट गया है। और अवसर मिलते ही आत्मा उस शरीर को फेंककर अपने सच्चे तेज में आ जाती है। या यों समझ लो कि एक शैतान बालक की तरह आत्मा शरीर के दरवाजे को खोलकर बाहर निकल भागती है। इसी को मरना कहते हैं।

(घ) दुनिया में कौन धोखा नहीं करता? ये बड़े-बड़े साम्राज्य, बड़े-बड़े राष्ट्र, बड़ी-बड़ी संस्थाएँ, बड़े-बड़े व्यापारी ये सब क्या छल-कपट पर नहीं चलते हैं? बड़े-बड़े नेताओं और विजेताओं की सफलता और ख्याति की नींव क्या कपट और छल पर नहीं रखी गई? रात-दिन तुम इस भारतीय स्कूल में झक-झक करते हो। मेहनत करते हो, मरते हो, आँखे और दिमाग फोड़ते हो और इस सारे श्रम के बदले तुम पाते क्या? इज्जत और आराम की रोटी भी तुम्हें प्राप्त नहीं, ठीक तरह से खा-पी तो नहीं सकते, मैं कहता हूँ बस पी जाओ! दुनिया में धोखा वही है, जो उसकी आँख से छिपाया न जा सके। 9

**अथवा**

बेटी, वे लोग देश को बड़ी माँ कहते थे। कहते थे, 'वह तुम्हारी भी माँ है। वह हम सबकी माँ है।' कुशल भी यही लिखकर रख गया था, 'बड़ी माँ ने बुलाया है। जा रहा हूँ। मेरी राह न देखना।' न जाने किसने उन्हें यह सिखाया था! हम, जिन्होंने उन्हें पाला-पोसा, उनके लिए कष्ट सहे, उनके कुछ भी नहीं रहे, और वे जिन्हें कोई जानता तक नहीं, उनके सब कुछ हो गए।

2. एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'हरी घास पर घंटे भर' एकांकी की विवेचना कीजिए। 14

**अथवा**

'आवाज का नीलाम' एकांकी के नायक दिवाकर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

3. 'कालपुरुष और अजंता की नर्तकी' एकांकी की विषय वस्तु की सामान्य विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 14

**अथवा**

'उत्सर्ग' एकांकी की तात्त्विक विवेचना कीजिए।

4. 'कोणार्क' नाटक की तात्त्विक विवेचना कीजिए। 14

**अथवा**

अभिनेता की दृष्टि से कोणार्क नाटक का मूल्यांकन कीजिए।

5. कोणार्क नाटक की शिल्प की दृष्टि विवेचना कीजिए। 14

**अथवा**

ऐतिहासिक नाटकों की विशेषताओं के आधार पर 'कोणार्क' की समीक्षा कीजिए।

6. निम्न में से **दो** पर टिप्पणी लिखिए :

(i) नाटक और एकांकी में साम्य एवं वैषम्य 4

(ii) स्वातत्र्योत्तर हिंदी नाटक 4

(iii) विसंगत नाटक 4

(iv) रामकुमार वर्मा का एकांकी विधा में योगदान। 4

*****